ममता

(1)

रोहतास- दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्षण गम्भीर प्रवाह को देख रही हैं। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक- शयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थीं, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी - हिन्दू

विधवा संसार में सबसे निराश्रय प्राणी है- तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था ?

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल-नाद में, अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह-पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्रायः होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी । पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा - "यह क्या है पिताजी ?"

"तेरे लिए बेटी ! उपहार है।" -कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया। स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी-

"इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया ?"
"चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!"
"तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी, यह अनर्थ है अर्थ नहीं लौटा दीजिये। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?"

"इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त वंश का अन्त समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी।"

"हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस ! पिताजी,क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? यह असम्भव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ— इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है। "

"मूर्ख है" कहकर चूड़ामणि चले गये।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक् धक् करने लगा। वह अपने

को रोक न सका। उसने जाकर रोहतास-दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा-

"यह महिलाओं का अपमान करना है। "

बात बढ़ गयी। तलवारें खिची, ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े निकल गयी ममता । डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प को विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी। हुए जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थीं-

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते'-

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा, परन्तु उस व्यक्ति ने कहा– "माता ! मुझे आश्रय चाहिए। "

"तुम कौन हो ? " – स्त्री ने पूछा ।

“मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।"

"क्या शेरशाह से!" स्त्री ने अपने ओंठ काट लिये।

"हाँ, माता!"

"परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है। सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं, जाओ कहीं दूसरा आश्रय खोज लो !"

"गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है— इतना थका हुआ हूँ, इतना !" कहते कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी । उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी– "सब विधर्मी दया के

पात्र नहीं मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!" घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—"माता ! तो फिर मैं चला जाऊँ?" स्त्री विचार कर रही थी— “मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ... नहीं नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं परन्तु यह दया तो नहीं.... कर्त्तव्य करना है। तब ?

" मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो; ठहरो "छल!

नहीं तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ। भाग्य का खेल है। "

ममता ने मन में कहा - "यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली- "जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक । तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ।मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामयमुखमण्डल देखा, उसने मन ही मन नमस्कार

किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गयी। भीतर थके पथिक ने झोंपड़ीमें विश्राम किया।

प्रभात में खंडहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपनेको कोसने लगी।

अब उस झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा- “मिरजा । मैं यहाँ हूँ।”

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार ध्वनि से वह प्रान्त गूंज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा- "वह

स्त्री कहाँ हैं? उसे खोज निकालो।" गमता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग दाव में चली गयी। दिनभर उसमें से न निकली। सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है- "मिरजा ! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गये।

चौसा के मुगल-पठान - युद्ध को बहुत दिन बीत गये। मनता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा हैं। वह अपनी झोंपड़ी में एक

दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूंज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख-सुख की सहभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा- "मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गयी होगी, अब किससे पूछें कि एक दिन

शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्षसे ऊपर की हुई !"

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा – “उसे बुलाओ।"

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक रुककर कहा- "मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ीके खोदे जाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन

लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर- विश्राम गृह में जाती हूँ !"

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण- पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया—

“सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बीमन्दिर बनवाया।"

पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

- **जयशंकर प्रसाद**

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज

|| अभ्यास प्रश्न||

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही हैं। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी।वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी— हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था ?

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक'हिन्दी' के 'गद्य-खण्ड' में संकलित 'ममता' नामक कहानी से उधृत है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जयशंकर प्रसाद का कथन है कि तरुणाई में विधवा हो जाने के कारण उसका मन दु:ख से भरा था। उसके मस्तिष्क में आँधी के समाम तीव्रगति से अपने भावी जीवन की चिन्ता से सम्बन्धित अनेक विचार उत्पन्न हो रहे थे। उसकी आँखों से दु:ख के आँसू

निरन्तर बह रहे थे और राजप्रासाद की समस्त सुख-सुविधाएँ उसे काँटे की भाँति कष्ट पहुँचा रही थीं।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

उत्तर - उपरोक्त गद्यांश में हिन्दू-विधवा की स्थिति को दयनीय, शोचनीय, तुच्छ और उस प्राणी के समान बताया गया है, जिसे कोई आश्रय नहीं देना चाहता है। वह तरह-तरह के दुःख सहने के लिए विवश होती है।

(ख)"हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस पिताजी,क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ- इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।" "मूर्ख है" कहकर चूड़ामणि चले गये।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए। (उपर्युक्त)

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - **विपदा भरे दिनों के लिए इतना सारा आयोजन अभी से ही, यह अच्छा नहीं है। रिश्वत में लिया गया इतना सारा सोना लेकर आपने ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य और उसका अपमान**

किया है। यदि ईश्वर की इच्छा से हमें दुःख मिलने वाला है, तो हमें उसे सहने के लिए सहर्ष तैयार रहना चाहिए। पिताजी! मन्त्रित्व न रहने पर भी हमें पेट भरने के लिए कम-से-कम भीख तो मिल ही जाएगी। इस रिश्वत की अपेक्षा तो भीख माँगकर जीवित रहना अधिक उचित है। इस पृथ्वी पर उस समय भी बहुत से हिन्दू ऐसे होंगे, जो हम ब्राह्मणों को दो मुट्ठी अनाज भीख में दे देंगे।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में किस कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है?

उत्तर- ममता के पिता चूड़ामणि का मुगलो के द्वारा उत्कोच (रिश्वत) लेना परमपिता की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है।

(ग)"गला सूख रहा है, साथी छूट गए हैं, अश्व गिर पड़ा हैं— इतना थका हुआ हूँ, इतना!" कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, "यह विपत्ति कहाँ से आई?" उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी- "सब विधर्मी दया के पात्र नहीं— मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!" घृणा से उसकामन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा— "माता ! तो फिर मैं चला जाऊँ?" स्त्री विचार कर रही थी- "मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए। परन्तु यहाँ

.... नहीं नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं परन्तु यह दया तो नहीं......कर्त्तव्य करना है। तब ?"

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-ममता अपने मन में सोचने लगी कि मैंने मैं इस मुगल को जल देकर उचित नहीं किया। इसके प्राण तो बच गये लेकिन क्या पता अब यह मेरे साथ कैसा व्यवहार करेगा क्योंकि सभी विधर्मी दया के योग्य नहीं होते। अपने पिता के वध का स्मरण कर उसका मन विरक्त हो गया; क्योंकि पितृ-हन्ता को तो कदापि आश्रय न देना चाहिए।

(iii) स्त्री किस धर्म के पालन के विषय में विचार कर रही थी?

उत्तर-स्त्री ममता शरण माँगने वाले विधर्मी के प्रति अपने कर्तव्य पालन के विषय में सोच रही थी कि उसे क्या निर्णय करना चाहिए।

(घ) ममता ने मन में कहा – "यहाँ कौन दुर्ग है? यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली- "जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक। तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ? "मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन-ही-

मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गई। भीतर थके पथिक नेझोपड़ी में विश्राम किया।

प्रश्न–(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्तियों में ममता के उद्गार को सुनकर मुगल ने किस दृष्टि से उसे देखा और उसका हृदय कितना प्रभावित हुआ, इसे स्पष्ट किया गया है। ममता जब मुगल से कहा कि थके हुए पथिक मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ। भले सब लोग अपना धर्म छोड़ दें, कि न्तु मैं अपने धर्म ‘अतिथि उपासना ’ का पालन करना नहीं छो ड़ सकती । इतना सुनते ही असहाय मुगल ने चाँदनी रात के मन्द प्रकाश में गौरव मयी ममता के

मुख की आभा देखी और मन ही मन उसे नमस्कार किया। आश्रय देने वाली गरिमा मयी ममता की उदारता के सामने वह नतमस्तक हो गया।

(iii) ममता ने मुगल को क्यों आश्रय दिया?

उत्तर–ममता ने मुगल को आश्रय अपने कर्तव्य पालन की दृष्टि से दिया था। अतिथि की उपासना हर गृहस्थ का, विशेषकर हिन्दू धर्म में अनिवा र्य माना जाता है 'अतिथि देवो भव' धर्म का आदेश है इसी आदेश के पालन के लिए ममता ने आश्रय दिया। मुगल को आश्रय दिया।

(ङ)शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूंज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा - "वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग दाव में चली गई। दिन-भर उसमें से न निकली। संध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है- "मिरजा ! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना,क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गए।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित 'ममता ' पाठ से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक महा कवि जयशंकर प्रसाद हैं।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्तियों में मुगल को शरण देने की रात के बाद सुबह अनेक सैनिक उसकी झोंपड़ी ' के सामने घूम रहे थे। मुगल झोंपड़ी से बा हर निकल आया था। मुगल पथिक अपनी आश्रयदाता स्त्री को कुछ देना चाहता था इसलिए उसने आदेश दिया कि उस स्त्री को खोजो। जब वह नहीं मिली तो उसने एक मिरजा से कहा कि मैं आश्रय देने वाली उस स्त्री को कुछ भी नहीं दे सका। तुम उसका घर अवश्य बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति के क्षणों में यहाँ आश्रय पा या और विश्राम किया था। यह स्थान भूलना नहीं यह हिदायत देकर वे सब चले गये।

(iii) ममता क्यों भयभीत हुई ?

उत्तर–ममता का भयभीत होना स्वाभाविक था। ममता के मन में पहले से ही भाव भरा हुआ था कि सब विधर्मी दया के पात्र नहीं होते हैं। वे कभी भी धोखा , कृतघ्नता कर सकते हैं। शेरशाह ने ममता के पिता को मिला कर उनकी हत्या करवा दिया था और धोखे से दुर्ग पर अधिका र कर लि या था। इसी तरह सुबह मुगल भी अपने साथियों के मिलने के बाद ममता को पकड़ कर गुलाम बना सकता था।

(च)अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा- "मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे बह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी के खोदे जाने के डर

से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर- विश्राम गृह में जाती हूँ ।" वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गए।

अथवा मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह चिर-विश्राम गृह जाती हूँ।

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत पंक्ति यों में ममता के कथन को रेखां कित किया गया है। अनेक वर्षों बाद अब ममता 70 वर्ष की वृद्धा है, उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था । गाँव की कुछ स्त्रियाँ उसकी सेवा में लगी थीं ,थीं उसी समय कुछ घुड़सवार ममता की झोंपड़ी के

द्वार पर आकर बातचीत करने लगे कि मिर्जा ने जो चित्र बना कर दिया है वह यहीं होना चाहि ए। शायद शहंशाह हुमायूँ यहीं किसी छप्पर के नीचे बैठे थे। इन बातों को सुनकर ममता ने अश्वारोही को बताया कि मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह या साधारण मुगल, पर वह एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं जीवन भर इस विचार से डरती रही कि एक दिन यह मेरी झोंपड़ी खोद डाली जायेगी। भगवान ने मेरी प्रार्थना सुनली, आज मेरा अन्तिम दिन है। मैं सदैव के लिए यह झोंपड़ी छोड़े जा रही हूँ अब तुम्हारी इच्छा इसे मकान बनाओ या महल।

(iii) ममता ने अश्वारोही को क्या बताया?

उत्तर–ममता ने अश्वारोही को बताया कि एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे आश्रय लेने वाला शहंशाह था या असाधारण मुगल, मैं नहीं जानती। मैंने सुना था कि वह मेरा मकान बनवाने का आदेश दिया था मैं इसे आज छोड़कर अपने चिर- विश्राम गृह में जा रही हूँ। इसे मकान बनाओ या महल।

(iv) आजीवन भयभीत रहने का कारण लिखिए।

उत्तर–मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही।